

परीक्षा के नाम
 की सील

हायर सेकण्डरी परीक्षा नि

2010

परीक्षा का विषय **Chemistry**

का माध्यम **हिन्दी** परीक्षा की दिनांक **06/03/09**

केन्द्र क्रमांक की सील
561082

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर
 (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड सेट

U-2044 C

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण
 प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक
 उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में **35** अंकों में **01**

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष
 क्रमांक **05** में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट
 सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

[Signature] 63-09

नाम

A - Manoj k

पता/संस्था

Govt - M.C.B. School Chandigarh

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य
 उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

[Signature]

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है
 कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये
 निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित
 करेंगे।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION
 Bhopal, Madhya Pradesh
 प्रश्न क्रमांक K **1230452**
 परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)
2 9 5 6 1 5 6 4 4
 नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को
 उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए -
two nine five six one five six four four
 BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

- प्रश्न
- 1
 - 2
 - 3
 - 4
 - 5
 - 6
 - 7
 - 8
 - 9
 - 10
- कुल प्राप्ति

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या भू. उ.पु. के समय स. उ.पु. के ह. होलोक्राफ्ट के अनुसार
 चस्था स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर
 पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कवर-पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक)

[Signature]

परीक्षक क्रमांक

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रॉस किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कवर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3



+



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 3 का अंक

कुल

B
S
E
M
P

बि विकल्प ---

अ (iii) परिवर्तित नहीं होता है।

ब (ii) ओम = सेमी²

स (iv) कोलायडी विलयन

द (ii) C6H5NO2

ii) मॉफीन

रवाली स्थान

अ आयनिक क्रिस्टल में

~~ब आयनिक क्रिस्टल में~~

ब मोललता

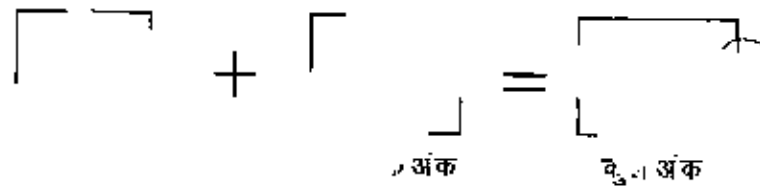
स $10^{-3} - 10^{-7}$ sec

द. विटामिन K

इ.

म (CMV₃) व KOH

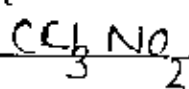
4



Q3 सही जोड़ी

हिरीरा

सहसंयोजक ठोस



क्लोरोपिक्रिन

स्कन्दन

कौलायडी विलयन का
अवक्षेपण

हमारे वाली गैस



आर्गन

घरों में उपयोगी

B
S
E
M
P

Q5. प्रथम कोर की अभिक्रिया के लिए
अर्ध आयु काल

अर्ध आयु काल किसी अभिक्रिया का वह
समय जब क्रियाकारक
की सांद्रता अपनी प्रारंभिक सांद्रता की
आधी रह जाती है। अर्थात् अभिक्रिया
आधी पूर्ण हो जाती है। अर्ध आयु काल
कहलाती है।

इसे 15 से दर्शाते हैं मात्रक मिनट

5

$$\frac{1}{a} + \left[\quad \right] = \left[\quad \right]$$



प्रथम आ कोरि की अभिव्यक्ति के लिये

$$K = \frac{2.303}{t} \log \frac{a}{a-x}$$

0 - प्रारंभिक स्थिति

$x = t$ समय पर्याप्त अभिव्यक्ति

t - समय

K दर स्थिरांक

अर्ध आयु काल के लिये

$$t \rightarrow t_{1/2} \quad x \rightarrow \frac{a}{2}$$

$$K = \frac{2.303}{t_{1/2}} \log \frac{a}{a - \frac{a}{2}}$$

$$t_{1/2} = \frac{2.303}{K} \log \frac{2a}{a}$$

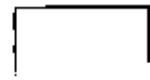
$$t_{1/2} = \frac{2.303}{K} \log 2 \quad \left\{ \log 2 = 0.3010 \right.$$

B
S
E
M
P

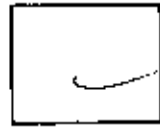


पृष्ठ सं.

6



+



=

कुल अंक



पृष्ठ 6 के अंक

$$t_{1/2} = \frac{2.303}{k} \times \frac{2.303}{3010}$$

$$t_{1/2} = \frac{.693}{k}$$

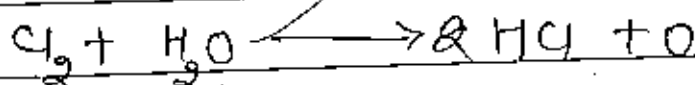
अर्थात् अर्धआयु काल अभिक्रिया क्रियाकारक की संज्ञता पर निर्भर नहीं करता

बिना] P_2 द्वारा फूलों का विरंजन स्थायी होता है जबकि SO_2 द्वारा अस्थायी कमीति

P_2 की विरंजन क्रिया ऑक्सीकरण पर आधारित है

जब कोई कार्बनिक पदार्थ, फूल पत्तों के सम्पर्क में आते हैं तो वह उनका रंग उड़ा देती है इसे ही विरंजन क्रिया कहते हैं

P_2 फूलों कार्बनिक पदार्थों में उपस्थित मनी से क्रिया कर नवजात (0) ऑक्सीजन उत्पन्न करती है



B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

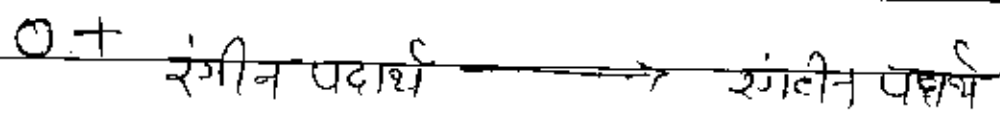
7

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \underline{\quad}$$

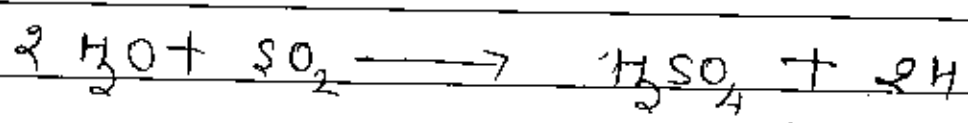
योग पृष्ठ 7 के अंक कुल अंक



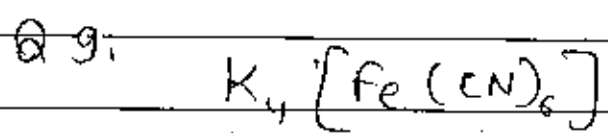
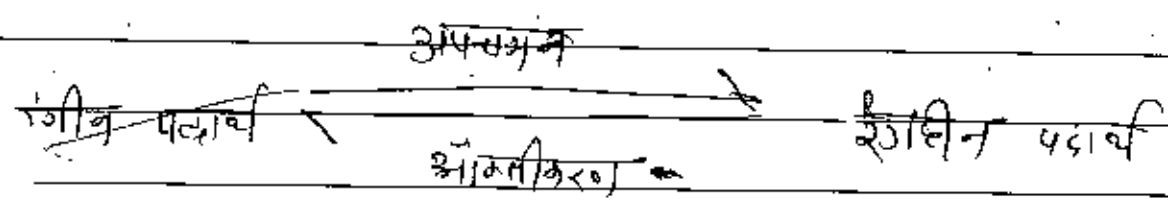
यह ऑक्सीजन की ऑक्सीकरण क्रिया होती है।



जबकि SO_2 की ऑक्सीकरण क्रिया अपचयन पर आधारित है। यह कार्बनिक पदार्थ में उपस्थित नमी से क्रिया कर नवजात में उत्पन्न करती है।



किंतु वायुमंडल की O_2 द्वारा द्वारा इलाका पुनः ऑक्सीकरण हो जाता है। अतः इलाका बंग वापस आ जाता है।



IUPAC Name - पोटेशियम हेक्सासायनोफेरेट (II)

B
S
E
M
P

8

+

[]

=

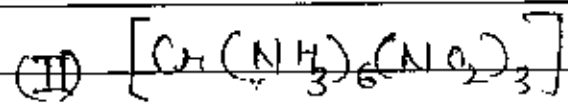
[]



प्राग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 8 के अंक

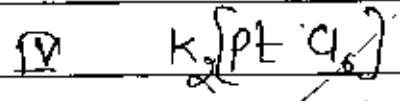
कुल अंक



IUPAC Name हेक्साअमीनो नॉरायनाइट्रो क्रोमियम (III)



NC Name ट्रायसायनो निकेल (0) क्लोराइड

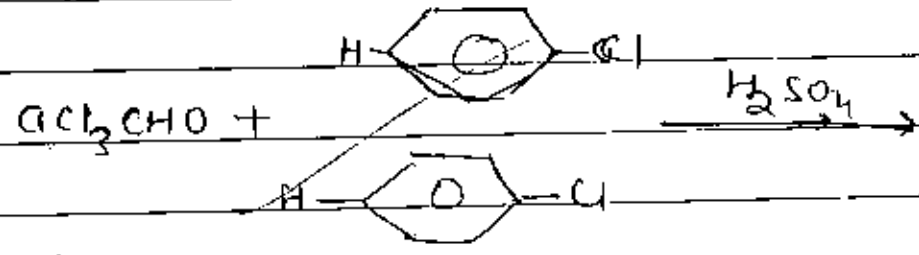


Name पोटेशियम हेक्सा क्लोरो प्लैटिनेट (IV)

Q10 टीपणी

D.O.T. → ~~अथवा~~ PP' टाय क्लोरो टायलेन टेट्रा क्लोरो यथेन

यह क्लोरल व क्लोरो बेन्जीन की सांद्र H_2SO_4 की उपस्थिति में त्रिया में बनता है



[]

पृष्ठ के अंकों का योग

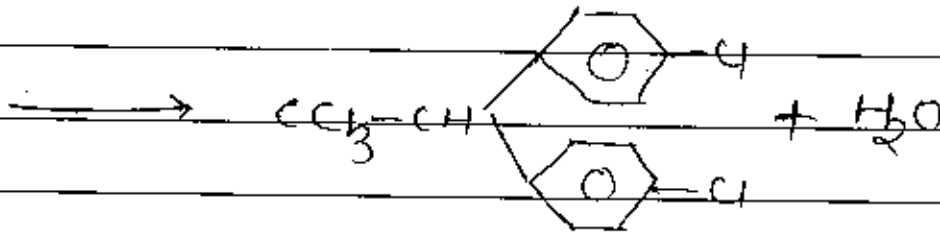
R
E
M
P

9

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक



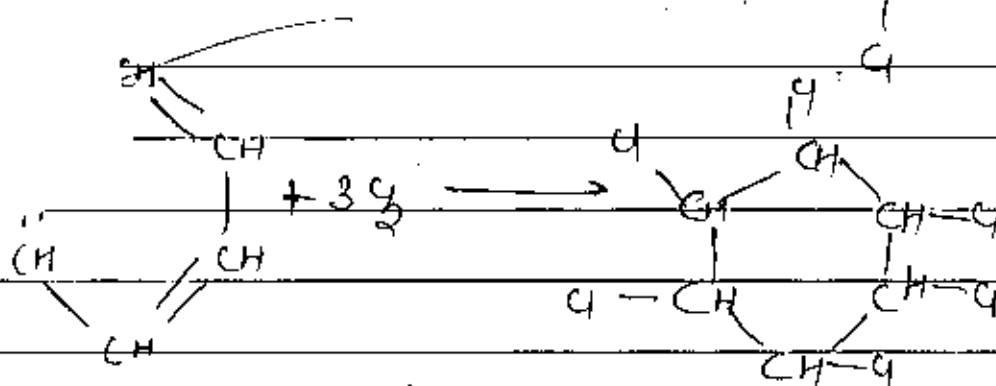
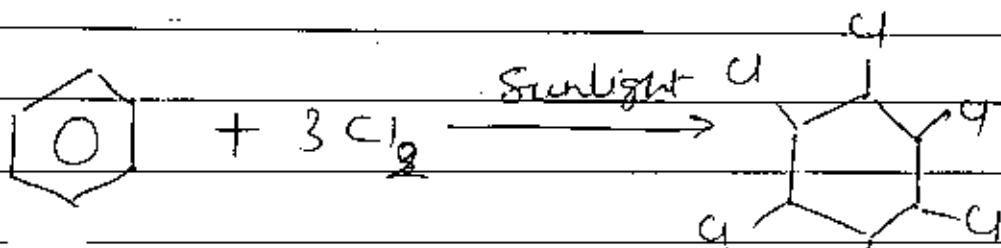
P P' डाइ क्लोरो डाइ फेनिल टेट्रा क्लोरो एथेन

यह एक प्रबल कीटाशुद्धी मरुहको के माध्यम से काम आता है।

यह जैव अपघरनीय नहीं है मतः ~~मनुष्य~~ ^{सजीव} के लिये हानिकारक है कृषि में उपयोग किया जाता है पूरी तरह से बर्बादी का पर्याय है

~~BHC~~ BHC ~~बेन्जीन हेक्सा क्लोराइड~~
(~~C₆H₆Cl₆~~)

इसे बेन्जीन की सूर्य प्रकाश की उपस्थिति में पृथी क्रिया से बनाया जाता है।



पृष्ठ के अंकों का योग

B
S
E
M
P

10

योग पृष्ठ 4

+

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक

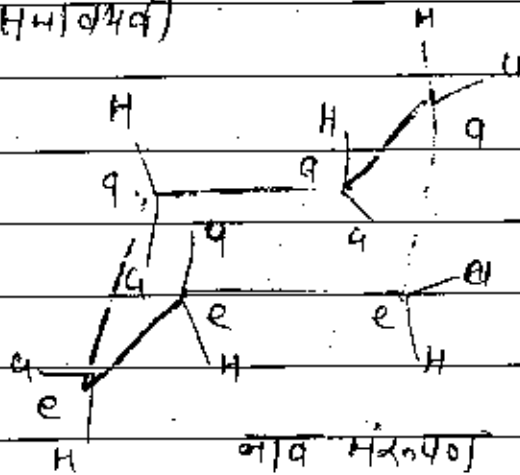


इसे गेमेक्लीन, लिंडेन, 666 के नाम से भी जानते है

यह DDT से प्रबल छत्रकी कीटनाशक है

इसके 8 समावयवी है किंतु अभी तक 5 (4 B & 1 E) ही सी शुद्ध रूप में प्राप्त हुए है इसका छत्रकी कीटनाशक गुण γ समावयवी के कारण होता है जिसका वि-मात्र $aaeeee$ होता है

γ समावयवी



क॥

सिद्धांत - इसे सुल्फोनिक अम्ल H_2SO_4 की क्रिया द्वारा $150^\circ C$ ताप पर बनाया जाता है



पृष्ठ के अंकों का योग

B
S
E
M
P

(11)

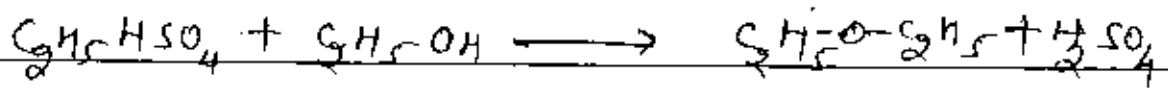
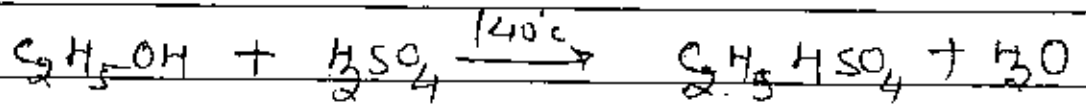
+

=

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

कुल अंक



इसे पिलिथमसत की अतिरिक्त ईथरीकरण विधि कहते हैं क्योंकि इसमें प्रयुक्त किया सांद्र H_2SO_4 हमें पुनः प्राप्त होता है जिससे होता प्रतीत होता है कि H_2SO_4 की जलसे की आगे आवश्यकता नहीं पड़ती

किंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। इस अभिक्रिया में बनने वाला जल $Con. H_2SO_4$ को तबु ~~कर~~ कर देता है। इस कारण हम पुनः $Con. H_2SO_4$ डालना पड़ता है।

विधि - एक लेनिकल फ्लास्क में मुल्कोटल डालते हैं। मुल्कोटल में थोरे

बहु सांद्र H_2SO_4 डालते हैं। इसे बालू डलक पर रख देते हैं। थर्मामीटर से ताप $140^\circ C$ होने देते हैं फिर थोरे $Con. H_2SO_4$ पिहित

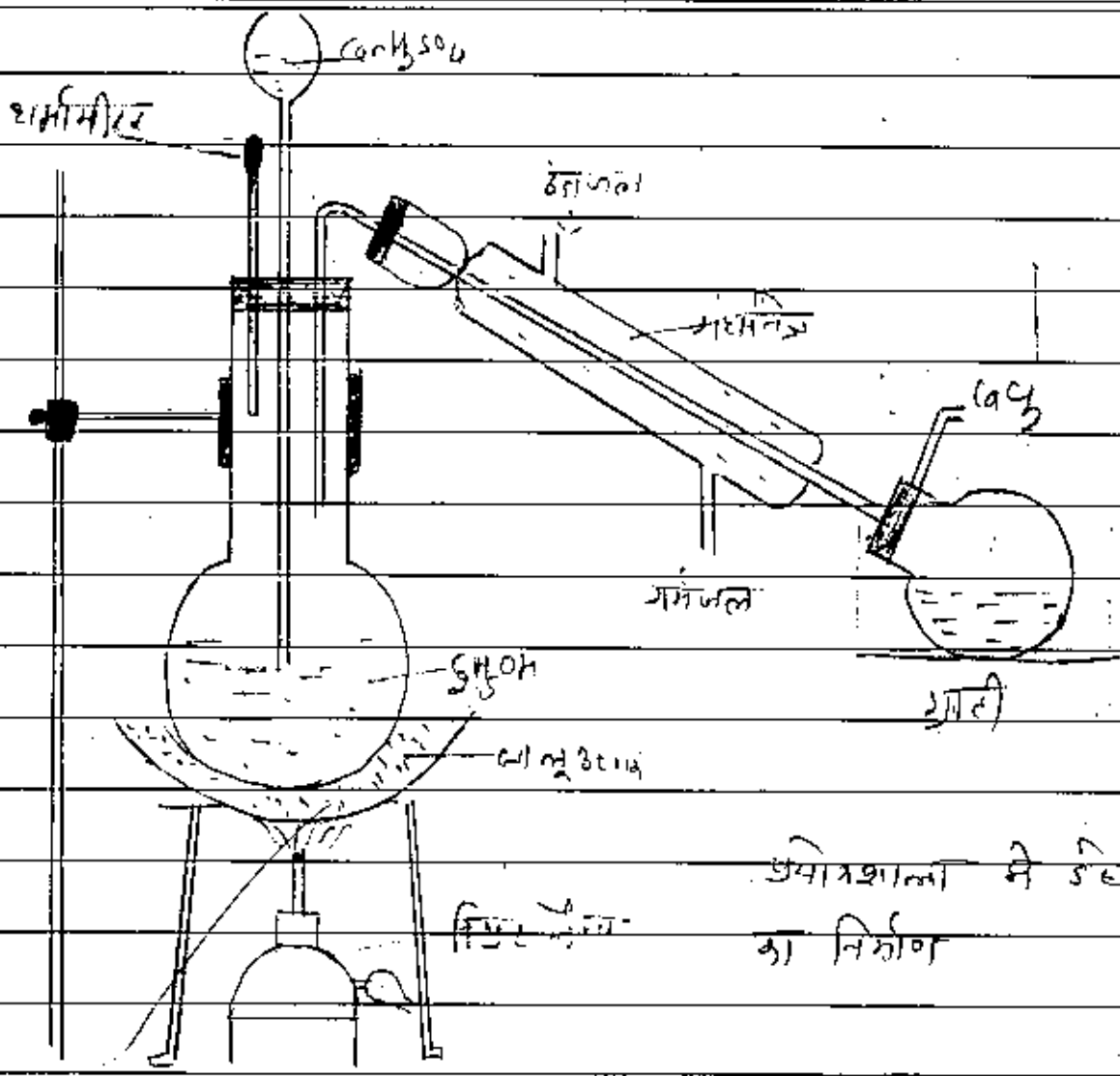
कीप की सहायता डालते ईथर की वाष्प बनती है जो संघनित में ठंडी होकर जली में मुक्ति हो जाती है।

B
S
E
M
P

12

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

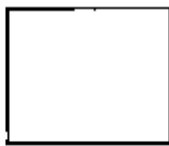
योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 12 क अंक कुल अंक



अमोनाशाक्त से ईथर का निर्माण

शुद्धिकरण - इससे प्राप्त ईथर शुद्ध करने के लिये ईथर वाष्प जलते हैं जिन्हें NO_2 व SO_2 की प्रशुद्धिमा इत्र हो जाती है फिर अपूर जलते हैं व आमबित करते हैं इसके अन्त में अनाइड अपूर कर के फिरको को तुरबते हैं जिससे शुद्ध ईथर प्राप्त होता है

B
S
E
M
P

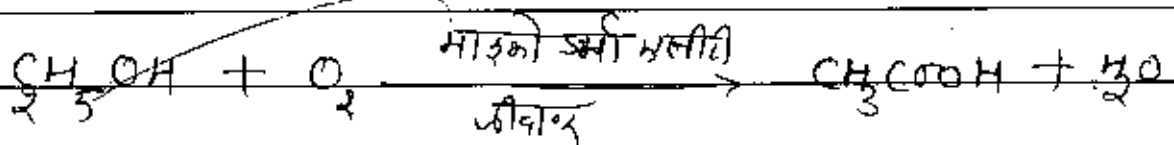


पृष्ठ के अंकों का योग

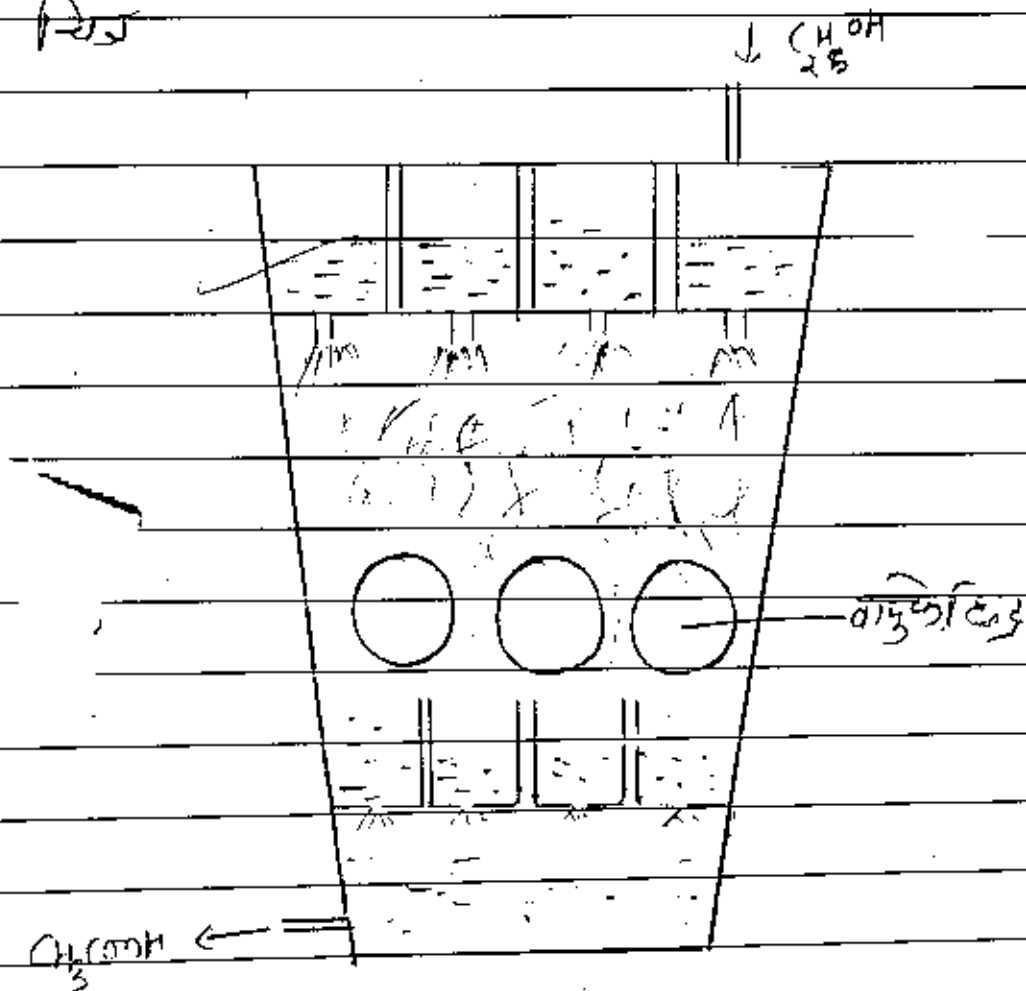


Q12 शीघ्र लिखिए विधि →

सिद्धांत : इसमें मुल्कोटल को माइक्रोडर्मा मुल्कीरी जीवाणु की उपस्थिति में ऑक्सीकृत किया जाता है जिससे माथिल मुल्कोटल प्रकीरक अम्ल प्राप्त होता है



चित्र



शीघ्र लिखिए विधि द्वारा प्रकीरक अम्ल का निर्माण

B
S
E
M
P

14

या 1 घट

+

पृष्ठ 14 के अंक

=

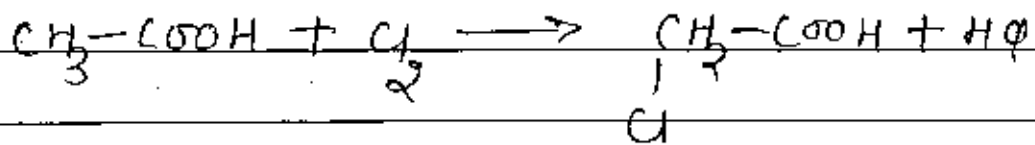
कुल अंक



B
S
E
M
P

विधि → इसे जर्मन विधि भी कहते हैं।
 इसमें लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों को एक क्रम में लगा देते हैं।
 प्रत्येक टुकड़े में दो विद्रित तस्त्वों से बने दो
 एक ऊपर की ओर व दूसरा नीचे की ओर
 नीचे स्थिति स्थित विद्रित तस्त्वों के कुछ
 ऊपर बांध के लिये छिद्र होते हैं।
 प्रत्येक टुकड़े में पुराने सिरों के
 भी नीचे बांध कर रखी जाती है।
 और इस माइक्रोडर्मो मशीन जीवाणु उत्पन्न
 होने जाते हैं प्रत्येक तथा टुकड़े में अमोनियम
 कार्बोनेट व अमोनियम सल्फेट डाल देते हैं।
 अल्प दूध को ऊपर से नीचे गिराते
 हैं जिससे मलकोलक की ऑक्सीकरण
 हो जाता है। व इससे इसे बार-बार
 ऊपर से नीचे गिराने पर इसकी सांद्रता
 8-10% तक पहुँच जाती है।
 इस प्रकार मशीनिक अम्ल बनाता है।

मशीनिक अम्ल व धुँकी-छिपा



α क्लोरो मशीनिक अम्ल

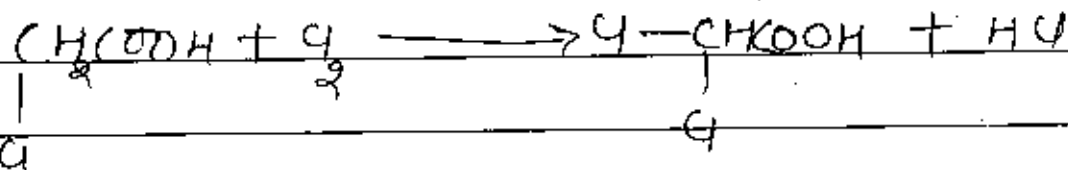
15

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

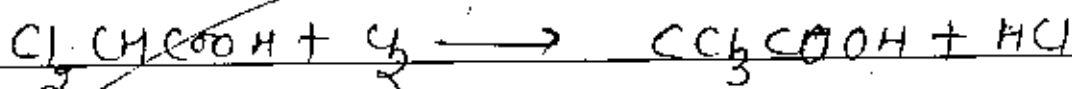
योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



इस प्रकार की प्रतिक्रिया को अम्ल



इस प्रकार की प्रतिक्रिया को अम्ल

B
S
E
M
P

विषय

DNA

RNA

यह जीवित कोशिका के केन्द्रक में पाये जाते हैं तथा क्लोरोप्लास्ट व माइटोकॉन्ड्रिया में भी उपस्थित होते हैं।

यह कोशिका के केन्द्रक व कोशिकाद्वय दोनों में पाये जाते हैं किंतु माइटोकॉन्ड्रिया में व क्लोरोप्लास्ट में नहीं होते हैं।

2) इसकी संरचना द्विसूत्री होती है।

2) इसमें एक सूत्र ही होता है।

3) इसमें डी-आम्बोसोसिक शर्करा होती है व इसमें थायमीन बेस होता है।

3) इसमें राइबोस शर्करा होती है व थायमीन के स्थान पर यूरेसिल बेस होता है।

4) ये आनुवंशिकता के वाहक हैं।

4) ये केवल संदेश वाहक होते हैं।



पृष्ठ



इमनी पीढ़ी तक पहुँचाते हो

विय

औषधिय पौधो के नाम

उपचार

①

ब्राह्मी

जीवनवर्धक, शक्ति वर्धक
वीर्य वर्धक आनु वर्धक

②

आमला

मधुमेह, रवाँसी, अस्थमा

③

लेहसून

मधुमेह अस्थमा, वाक्स्थ
वर्धक

④

काजू

विवाह, दस्त लाने में

शिक्ष-

नार्मलता किसी विलयन के 1 लीटर आयतन में उपस्थित विलेय के ग्राम तुल्योकी भारो की संख्या विलयन की नार्मलता कहलाती है।

विलेय का ग्राम तुल्योकी भार

(N) नार्मलता

विलयन का लीटर में आयतन

17

योग पूर्व पृष्ठ

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{}$$

पृष्ठ 17 के अंक

कुल अंक



$$N = \text{विलय का } m \text{ में आशु } \times 1000$$

दुल्मोणी भार (E) X विलयन का ml में आयतन

$$N = \frac{W \times 1000}{E \times V}$$

मात्रक - gm equivalent/liter

मोललता - किसी विलयन में विलयक के 1000 gm अथवा 1 kg में उपस्थित मोलों की संख्या विलयन की मोललता कहलाती है। इसे m से इशारेते है।

$$m = \frac{\text{विलय के मोल}}{\text{विलयक का भार (kg)}}$$

विलयक का भार (kg)

$$m = \frac{\text{विलय का भार (WB)} \times 1000}{M_B \times W_A}$$

(M) विलयक - अणुभार X विलयक का भार (gm) (WB)

$$m = \frac{W_B \times 1000}{M_B \times W_A}$$

मात्रक - mole/kg

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

18

$$\boxed{} + \boxed{} = \boxed{53}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 18 के अंक कुल अंक



(iii) ppm - parts per million

किसी विलयन के 10^6 भागों में उपस्थित विलेय के भार भागों की संख्या ppm के साइता कहलाती है

$$\text{ppm} = \frac{\text{विलेय का द्रव्यमान}}{\text{विलयन का द्रव्यमान}} \times 10^6$$

iv मोलरता किसी विलयन के 1 लीटर आयतन में उपस्थित विलेय के मोलों की संख्या को मोलरता कहलाती है इसे M से दर्शाते हैं

$$M = \frac{\text{विलेय के मोलों की संख्या}}{\text{विलयन का आयतन (L में)}}$$

$$M = \frac{\text{विलेय का भार } W_B}{1000}$$

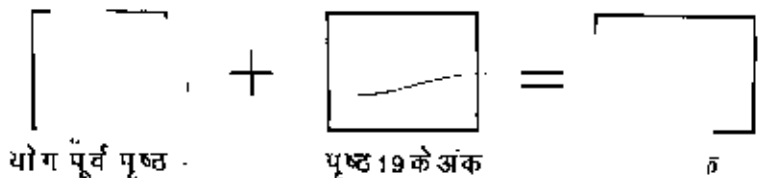
$$\text{विलेय का अणुभार } M_B \quad \text{विलयन का आयतन (ml)} V$$

$$M = \frac{W_B \times 1000}{M_B \times V}$$

अणुभार mole/liter

B
S
E
M
P

19



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 19 के अंक

8



V हेनरी का नियम - किसी गैस की द्रव में विलेयता उसके दाब के

समानुपाती होती है

यदि m विलेयता p दाब

$$m \propto p$$

$$m = k_H p$$

k_H हेनरी नियतांक

B
S
E
M
P

Q16. कोलराश नियम अनंत तनुता पर दुर्बल विद्युत अपघटन को पूर्ण आमनीहत मान सकते हैं

अनंत तनुता पर किसी दुर्बल विद्युत अपघटन की मोलर चालकता इसके समस्त घनायन व अणुआयनो की अनंत तनुता पर चालकताओं के योग के बराबर होता है

$$\Lambda_m^\infty = \nu \Lambda_v^\infty + \gamma \Lambda_c^\infty$$

Λ_m^∞ अनंत तनुता पर दुर्बल विद्युत अपघटन की मोलर चालकता

Λ_v^∞ अनंत तनुता पर ~~अपघटन~~ घनायनो की मोलर चालकता



पृष्ठ के अंकों का योग

20

$$\boxed{\quad} + \boxed{\quad} = \boxed{\quad}$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 20 के अंक कुल अंक



$\frac{\infty}{C}$ - $\frac{\infty}{C}$ रानुता पर क्रायतो की मोलर सात्वता

x - मुनापतो की ताख्या

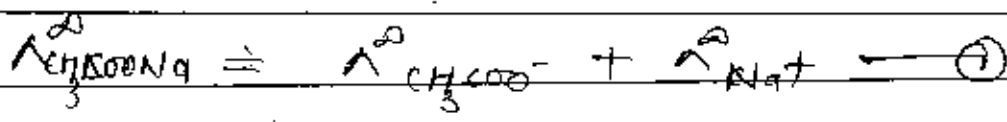
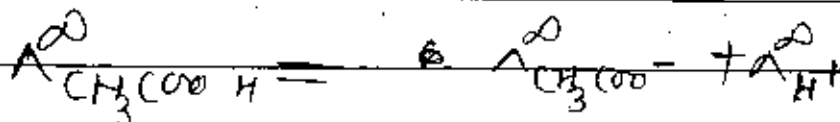
y - क्रायतो की ताख्या

अनुप्रयोग -

①

दुर्बल विद्युत अपघट्यको सीमांत आविक्त चालकता को ज्ञात करने में

अपघट्यको की चालकता सीधे ज्ञात नहीं की जा सकती क्योंकि वह पूर्णतः आपनीकृत नहीं होते अतः दुर्बल कोलराश नियम की सहायता से हम इसे ज्ञात कर सकते हैं।
उदा. ~~CH₃COOH~~ CH₃COOH की मोलचालकता λ_{CH_3COOH} व $\lambda_{CH_3COO^-}$ व λ_{H^+} की सहायता से ज्ञात की जाती है।



B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग

(21)

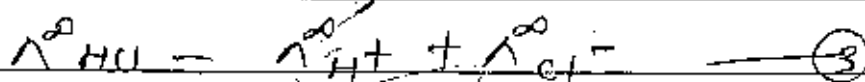
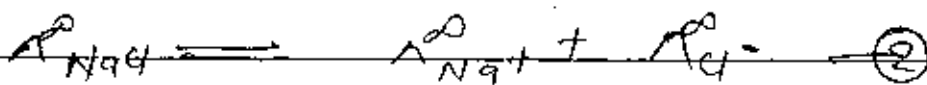
योग सूत्र

+

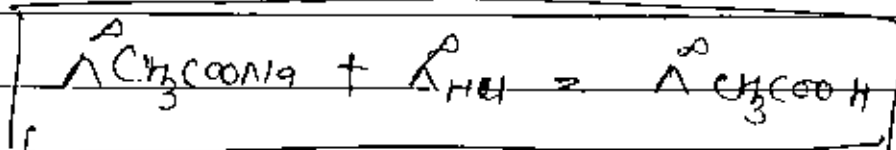
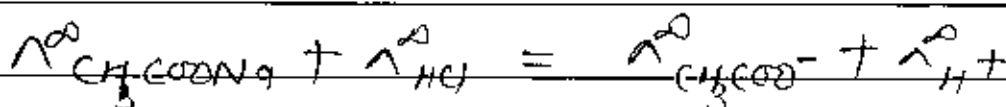
पृष्ठ 21 के अंक

=

कुल अंक



$$\text{①} + \text{③} - \text{②} \quad \text{करने पर}$$



इसी-इस तरह हम किसी भी दुर्बल विद्युत अपघट्य की चालकता प्रबल विद्युत अपघट्य की संख्या से निकाल सकते हैं

दुर्बल विद्युत अपघट्य की आयतन की मात्रा ज्ञात करने में

किसी दुर्बल विद्युत अपघट्य की आयतन की मात्रा व मोलर चालकता में सीधा संबंध होता है आयतन की मात्रा V का α पर मोलर चालकता व ∞ तनुता पर मोलर चालकता के अनुपात के बराबर होती है

$$\alpha = \frac{\Lambda^V}{\Lambda^{\infty}}$$

22

$$\square + \square = \square$$

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 22 के अंक कुल अंक



कोलर (अ) नियम के

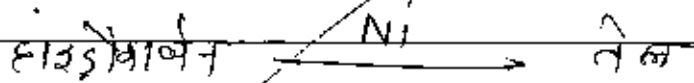
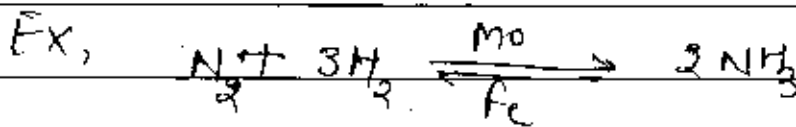
$$\alpha = \frac{\Lambda_m^v}{\Lambda_m^\infty}$$

$$\Lambda_m^\infty = \Lambda_m^\infty + \Lambda_m^\infty$$

$$\alpha = \frac{\Lambda_m^v}{\Lambda_m^\infty}$$

$$\Lambda_m^\infty = \Lambda_m^\infty + \Lambda_m^\infty$$

बिना (I) संक्रमण धातु अच्छी उत्प्रेरक होती है अधिकतर अभिक्रिया में उत्प्रेरक का कार्य संक्रमण धातुओं ही करती है



कारण

1) परिवर्ति संयोजकता व साहस्यमिक शक्ति \rightarrow संक्रमण धातुओं

की परिवर्ति संयोजकता होती है अतः जब

किसी क्रियाकारक इसके सम्पर्क में होता

है तो ये उसके साथ साथ साहस्यमिक

शक्ति बना लेता है जिससे प्रतिक्रिया

दुर्गम का मान कम होता है तथा

उत्पाद जल्दी बना जाता है

B
S
E
M
P

$\square + \square = \square$
 योग = पृष्ठ 23 के अंक कुल = 5



B
S
E
M
P

(2) पृष्ठ क्षेत्रफल अधिक संग्रहण शक्ति का उपयोग इलेक्ट्रिक के रूप में कले कोलिमे इका नूर्ण बना लिया जाता है जिससे पृष्ठ क्षेत्रफल का मान बढ़ जाता है और क्रियाशीलता को डिफा ब्रैके के लिये अधिक साहस्यिक योगिता बनाने के लिये अधिक क्षेत्रफल मिल जाता है व परिवर्ती संयोजता भी बढ़ जाता है

3) ~~संकुचन~~ संकुचन बनाने के कारण संकुचन शक्ति प्रकृति स्वयं ही चित्त इसके बनने में या तो उर्जा उत्पन्न होती है या अवशोषित उच्च उर्जा क्रियाशील अणुओं को संक्रमण उर्जा उदान करती है

(ii) संक्रमण शक्ति परिवर्ति क्रमोक्त संयोजता दर्शाते हैं क्रमोक्ति अने व अर्धचक्र सं संरक्षित होते हैं तथा $(n-1)d$ व nd श्रेणी की कक्षा संयोज के ए संयोजक की भांति कार्य करते हैं इसी कारण ~~इस~~ उनकी संयोजता परिवर्तित होती रहती है

पृष्ठ के अंकों का योग

Ex. हमें का सामान्य संयोजता + 3

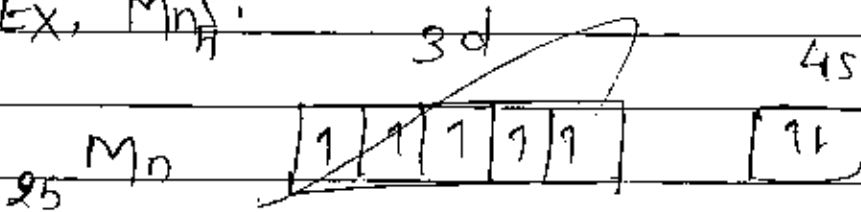
24

$$\left[\begin{array}{c} \text{योग पूर्व पृष्ठ} \\ \text{पृष्ठ 24 के अंक} \end{array} \right] = \left[\begin{array}{c} \text{कुल अंक} \end{array} \right]$$



होती है निम्नतम +2 व अधिकतम +7 होती है

Ex. Mn²⁺

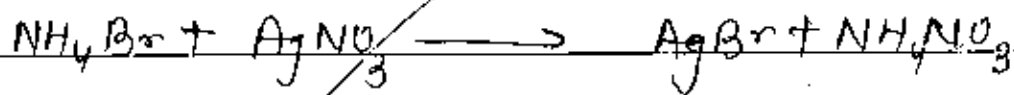


से +2, +3, +4, +5, +6, +7 अवस्था में रह सकता है

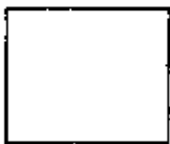
B
S
E
M
P

Q.6 कोरोग्राफी → किसी वस्तु का चित्र उकार की सहायता से अंकित करना कोरोग्राफी कहलाता है। इसके मुख्य चरण निम्न लिखित हैं।

(1) कोरोग्राफिक प्लेट बनाना → इसके अमोनियम क्रोमाइट के जिलेटिन विलयन में $AgNO_3$ मिलाकर बनाते हैं जिससे अणुओं की परत आती है



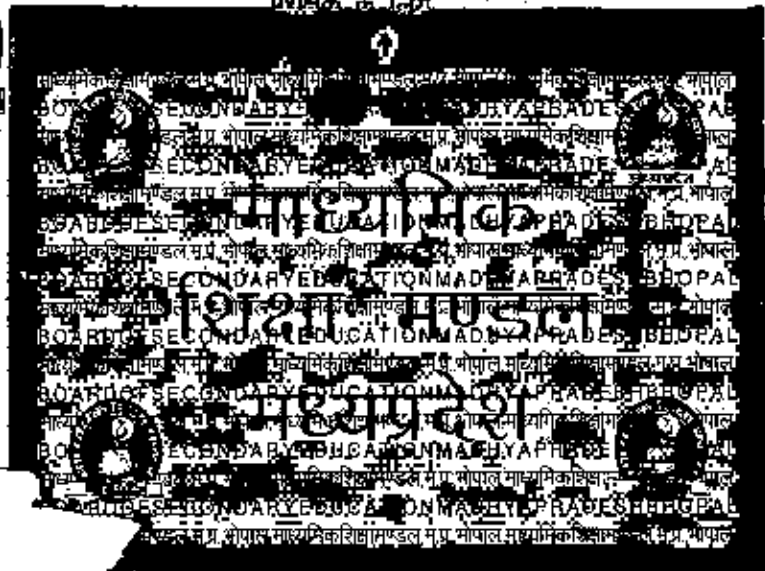
2) उद्भासन photo खींचना → अल्प समय के लिए जिस वस्तु



पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

परीक्षा के लिये



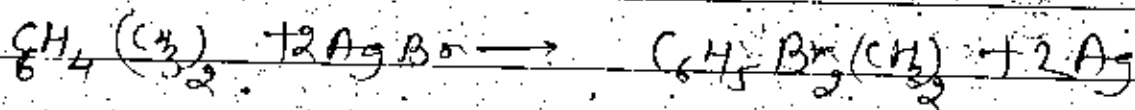
1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक *Amis*
6/3/09
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील *(Signature)*
4. केन्द्र क्रमांक केन्द्र क्रमांक
561002
6. परीक्षा का नाम _____
7. विषय Chemistry 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 06/09/09

पृष्ठ 25

B
S
E
M
P

3) photo खींचना से ऊपर फोकस कर उकाश
उद्भावित होते हैं जिससे मिग्रा अप अपचमित
हो जाता है।

(B) ~~Developing~~ (डेवलपिंग) → अब फोटोग्राफिक
लेट को डिमी डेवलपर
(क्विन्लॉक, पायरोग्लूसीनॉक काडि का सॉरिय विलमन)
में डालते हैं जिससे मिग्रा अप अपचमित होकर
हो जाता है।



(C) प्रिंटिंग → pop (printing out paper) पर अक्सि
काल उकाश की उपस्थिति में उत्पन्न होते हैं
इसका नाम चित्र उल्टा Negative कहलाता है। इस
Negative का दुसरा Negative बनाते हैं जिसे इसका
Positive बना जाता है।

2

26



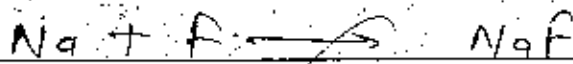
Toning का संस्करण \rightarrow ज्ञान चिकित्से के चमत्कृत
 या आत्मा मही होती है इसे
 चतुर्दश ध्वनि के लिये आरिक्त कलोराइड
 विद्यमान में डुबोते हैं

वि० F_2 , P_2 की युग्मा में प्रथम ऑक्सीकाल
 होती है इसके मुख्य दो कारण हैं

(1) उच्च अणु विद्युता

(2) छोटा आकार

F_2 की अणुविद्युता उच्च होती है
 अतः e^- के काल में e^- की प्रकाश कल
 की प्रथम आगला परवती है इसका छोपकाकाल
 होने के कारण Na बाधमत्तम केमी पर कोश पर
 e^- नाभिक प्रकट मजबूत रहता है इसका ये
 डिमी भी पराभ से e^- निकालकर अने उच्च
 ऑक्सीकाल कर देती है



य HF उच्च क्षेत्रा है जबकि अन्य हैलोजन के
 हाइड्राइड सामान्य ताप पर गैल होते हैं किन्तु
 क्योंकि F सबसे अधिक विद्युत अणुकारक
 तत्व होता है अतः यह $H-F$ बंधन के
 साझे के e^- को अपनी कोट काधिकृत
 कर लेता है किन्तु $H^{\delta+} - F^{\delta-}$, H पर
 अधिक धनोत्स e^- पर आरिक्त अणुकारक

B
S
E
M
P

3

37

योग पूर्व पृष्ठ

+

पृष्ठ 3 के अंक

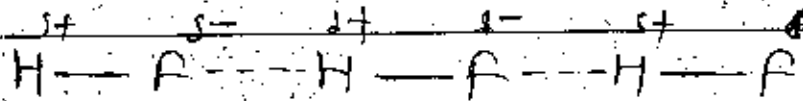
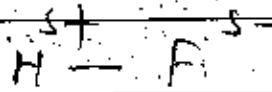
=

कुल



उप. हो जाता है

जो हाइड्रोजन बंध के कारण क्लोराइड में जुड़ होते हैं अतः HF द्रव है



H Bond

B
S
E
M
P

Q4

B3 शीट में उत्तर

(1) Cu काथोड

(2) आउनी गति

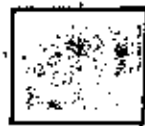
(3) संवत्परक

(4) व व S कक्षा पूर्ण भरित होनी है

(5) AgNO₃ सिल्वर नाइट्रेट

पृष्ठ के अंकों का योग

4



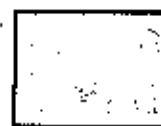
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 4 के अंक

=



कुल अंक



B
S
E
M
P



के अंक